Downloaded from www.studiestoday.com

अन्तरा भाग–1

काव्य–खण्ड

छात्र–निर्देश :

पाठ्य पुस्तक का काव्य खण्ड 20 अंक का है।

सप्रंसग व्याख्या (एक) –	8 अंक
काव्य पर आधारित प्रश्न (दो)–	6 अंक (3+3)
काव्य–सौंदर्य आधारित प्रश्न (दो) –	6 अंक (3+3)

www.studiestoday.com

क) व्याख्या का उत्तर तीन उपशीर्षकों में देना अनिवार्य है :–

1. प्रसंग, 2. व्याख्या, 3. शिल्प–सौन्दर्य

1. **प्रसंग–** इसके अन्तर्गत कवि और कविता का नाम अनिवार्य रूप से दें। पाठ्यपुस्तक का नाम न लिखें। एक पंक्ति में काव्य का पूर्वापर प्रसंग लिखें।

2. **व्याख्या**– काव्य पंक्तियों को समझने के उपरान्त अर्थ को अपने शब्दों में व्यक्त करें। कविता की व्याख्या कवि के मत एवं भावानुसार करें, अपना मत प्रस्तुत न करें।

3. शिल्प–सौन्दर्य– इसमें भाषा, रस, छन्द, अलंकार आदि का निरूपण करें।

ख) काव्य–सौन्दर्य – इसे केवल दो उपशीर्षकों में विभक्त करें।

1. भाव–सौन्दर्य– इसके अन्तर्गत एक या दो पंक्तियों में मात्र भाव स्पष्टीकरण करें।

2. शिल्प–सौन्दर्य– इसमें कवि की भाषिक विशेषता, विशिष्ट प्रयोग, रस, छन्द, अलंकार आदि का निरूपण, लय, चित्रात्मकता, बिम्ब योजना आदि को स्पष्ट करें।

व्याख्या एवं काव्य–सौन्दर्य का अंतर स्पष्ट करने के लिए एक ही काव्यांश को उदाहरण स्वरूप दिया गया है :–

‘‘झहरि – झहरि झीनी .... आँसु ह्वै दृगन में।।’’

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

पाठ-1 कबीर

कबीर के पद

कवि – कबीर (भक्तिकालीन निर्गुण काव्य धारा के संत कवि)

रचनाएँ – बीजक, साखी, सबद, रमैनी। कबीर की कुछेक रचनाएँ गुरु ग्रंथ साहब में संकलित हैं।

काव्यगत विशेषताएँ-

कबीर की भाषा सधुक्कड़ी है। जन भाषा की सहजता में गूढ़ दार्शनिक चिंतन की अभिव्यक्ति है।

कबीर के काव्य में तुकात्मकता और लय के कारण गेय तत्व हैं (कबीर के सभी पद गाए जा सकते हैं।)

अपनी बात को स्पष्ट करने हेतु दृष्टांत एवं साक्ष्य का प्रयोग किया है।

कबीर के काव्य में अलंकारों का सहज व स्वाभाविक प्रयोग है। भावपूर्ण अभिव्यक्ति कबीर के काव्य का, उनकी रचनाओं का आन्तरिक गुण है।

पद-1

"अरे इन दोहुन राह न पाई .... राह है जाई।।"

मूल भाव - प्रस्तुत पद में कबीर ने धर्म के वास्तविक स्वरूप के प्रति हिन्दुओं और मुसलमानों की अनभिज्ञता को उजागर किया है। दोनों ही बाहरी क्रियाकलापों को धर्म के सन्दर्भ में ग्रहण कर अपने धर्म को दूसरे धर्म में श्रेष्ठ सिद्ध करने हेतु प्रयासरत रहते है।कबीर ने धार्मिक आडम्बरों का विरोध किया है। इन बाह्य क्रिया-कलापों में उलझे रहने के कारण दोनों (हिन्दू और मुसलमान) ईश्वर प्राप्ति की राह से भटक गए हैं।

व्याख्या बिन्दु- हिन्दू और मुसलमान के धार्मिक आडम्बरों का विरोध करते हुए उन पर प्रहार किया है।

बाह्य आडम्बरों के कारण ईश्वर प्राप्ति के मार्ग से भटक जाते हैं। ईश्वर तक पहुँच नहीं पाते,

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

उन्हें अपनी राह नहीं मिलती। दोनों ही अपने धार्मिक कर्म काण्ड को श्रेष्ठ मानकर दूसरे को गलत मानते हैं।

कबीर हिन्दुओं के बारे में बताते हैं कि किस प्रकार वे लोग वर्ण भेद करते हैं तथा निम्न जाति को अपने पानी के बर्तन का स्पर्श तक नहीं करने देते हैं इस प्रकार ऐसे वे स्वयं को उच्च वर्ण का सिद्ध करते हैं। दूसरी ओर वे हीन कर्मों में प्रवृत्त हैं।

मुसलमानों की दशा भी समान है। एक ओर तो वे ईश्वर प्राप्ति में संत, फकीर, पीर, औलिया बन जाते हैं अर्थात् सांसारिक मोह माया से परे हैं तो दूसरी ओर सामिष हैं। जीव हत्या करते हैं। अपनी बहन से विवाह कर लेते हैं जो कि हिन्दू धर्मानुसार सर्वथा अनुचित है।

कबीर कहते हैं कि उन्होंने हिन्दू-मुसलमान दोनों के आडम्बरों को देखा है और जानते है कि इस प्रकार ईश्वर प्राप्ति संभव नहीं है।

मोक्ष की प्राप्ति केवल ईश्वर भक्ति से संभव है। इसके लिए बाह्य आडम्बरों की आवश्यकता नहीं है।

कबीर की भाषा सधुक्कड़ी है। सहज सामान्य भाषा में ईश्वर प्राप्ति जैसे रहस्यात्मक भाव की अभिव्यक्ति है। शब्द चयन भावपूर्ण एवं भावानुकूल है।

'सब सखियाँ' 'कहै कबीर' में अनुप्रास अलंकार है।

गीति तत्व दृष्टव्य है।

अभ्यास कार्य

व्याख्या :

''अरे इन दोहुन .... राह ह्वै जाई।।

बौद्धिक प्रश्न :

1. कबीर ईश्वर-प्राप्ति के लिए किस राह पर चलने की बात कर रहे है?
2. कबीर ने किस-किस पर प्रहार किया है?
3. 'हिंदुन की हिंदुवाई देखी तुरकन की तुरकाई' का आशय स्पष्ट करें।
4. कबीर ने किन-किन बाह्य आडम्बरों का उल्लेख किया है?
5. सिद्ध कीजिए कि उक्त पद में कबीर का समाज-सुधारक रूप प्रदर्शित होता है।
6. उक्त पद कबीर के समन्वयात्मक दृष्टिकोण का श्रेष्ठ उदाहरण है, कैसे?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

पद-2

"बालम आवो हमारे .... जिव जाय रे।।"

मूल भाव : कबीर ने स्वयं को परमात्मा की प्रेयसी (साधक) के रूप में चित्रित किया है। परमात्मा से मिलन की उत्कट आकांक्षा को शब्दबद्ध किया है।

कवि ईश्वर के हृदय में स्थान प्राप्ति के लिए इच्छुक हैं। ईश्वर मिलन न होने से वे दुखी हैं। इस पद में उनका विरहणी नायिका के रूप में चित्रण है।

'कामिन को है बालम प्यारा, ज्यों प्यासे को नीर' – दृष्टांत के माध्यम से मिलन की तीव्र इच्छा व्यक्त की है।

परमात्मा का सान्निध्य न मिलने के कारण कबीर को न तो अन्न अच्छा लगता है और न ही नींद आती है। यह वियोग अवस्था है। निर्गुणमार्गी कबीर वियोग की चरमावस्था, हृदय की व्याकुलता और तीव्र मिलनाकांक्षा की अभिव्यक्ति के लिए साधक को प्रेयसी के साकार रूप में प्रदर्शित करते हैं। यहाँ कबीर निर्गुण और सगुण-दो भिन्न मतों के बीच एक साम्य स्थापित करते हुए दिखायी देते हैं। कबीर की भाषा सधुक्कड़ी (उस समय की प्रचलित जन भाषाओं का मिला-जुला रूप) है। श्रृंगार के वियोग पक्ष का चित्रण है। विप्रलंभ श्रृंगार, तुकात्मकता और लय के कारण गीतितत्व विद्यमान है।

'दुखिया देह', 'कोई कहै', 'जिव जाय' में अनुप्रास अलंकार है।

'कामिन को है बालम प्यारा ज्यों प्यासे को नीर' में दृष्टांत है।

अभ्यास कार्य

व्याख्या

'बालम आवो .... जिव जाय रे।'

काव्य-सौन्दर्य

अन्न न भावै नींद न आवै, गृह-बन धरै न धीर रे।
कामिन को है बालम प्यारा, ज्यों प्यासे को नीर रे।

बौद्धिक प्रश्न :

1. कबीर ने परमात्मा को और स्वयं को किस रूप में चित्रित किया है?
2. किस के बिना देह 'दुखिया' है?
3. कबीर को अन्न न भाने, और नींद न आने का कारण क्या है?
4. कबीर की किस अवस्था का चित्रण किया गया है?
5. पर उपकारी से कबीर क्या आशा करता है?
6. इस पद में कौन सा रस है?
7. 'दुखिया देह' 'जिव जाय' में कौन सा अलंकार है?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

पाठ–2 सूरदास

कवि – सूरदास (सगुण भक्तिधारा के कृष्णभक्त कवि)

रचनाएँ – सूरसारावली, साहित्य लहरी, सूर सागर।

काव्यगत विशेषताएँ–

सूरदास के पदों की भाषा ब्रज है।

साधारण बोलचाल की ब्रज भाषा का परिष्कृत रूप है।

काव्य में माधुर्य गुण, स्वाभाविकता और सजीवता विद्यमान है।

तुकात्मकता तथा लय के कारण संगीतात्मकता का समावेश है।

पद गेय (गाने योग्य) है।

सूरदास ने मुख्यतः बाल लीला (कृष्ण) एवं राधा–कृष्ण प्रेम, गोपियों के प्रेम का चित्रण किया है।

सूरदास के पदों में अलंकरण सायास न होकर अनायास है।

अनुप्रास, रूपक, श्लेष आदि अलंकारों का सहज प्रयोग है।

काव्य सरस है। भावानुरूप शब्द चयन है।

पद–1

''खेलन में को काको .... करि नंद–दुहैयाँ''

मूल भाव – सूरदास ने कृष्ण की बाल लीला का वर्णन किया है। सूरदास ने बाल सुलभ चेष्टाओं का सूक्ष्म चित्रण किया है।

व्याख्या बिन्दु– ग्वाल–मित्रगण कृष्ण से कहते हैं कि तुम अपनी हार स्वीकार नहीं करते, हम पर अधिकार जताने का प्रयास करते हो, तो तुम्हारे साथ खेलना कौन पसंद करेगा?

खेल में सभी बराबर होते हैं। कोई बड़ा छोटा नहीं होता। खेल में किसी प्रकार की विषमता (जातिगत, अमीरी–गरीबी) के लिए स्थान कोई नहीं होता। कृष्ण हार जाने पर भी अपनी हार स्वीकार नहीं करते।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

ग्वालों (मित्रों) का कहना है कि न तो तुम जाति से हमसे ऊँचे हो और न ही हम तुम्हारी शरण में हैं। तुम अधिक गाय होने के तथा सम्पन्न परिवार के होने के कारण हम पर अधिकार जताते हो। यह सुनकर कृष्ण रूठ जाते हैं। मित्र कहते हैं कि खेल में क्रोध का कोई स्थान नहीं है। कृष्ण देखते हैं कि ग्वालबालों पर उनके रूठने का कोई अवसर नहीं हो रहा और सब खेल बन्द कर इधर-उधर बैठ गए हैं। वे मन ही मन खेलना चाहते है इसलिए नन्द बाबा की दुहाई देकर अपनी बाजी देने को तैयार हो जाते हैं और हार स्वीकार कर लेते हैं।

सूरदास की भाषा ब्रज है।

बालमनोविज्ञान का सूक्ष्म चित्रण है।

पद में तुकात्मकता तथा लय का समावेश है।

'दुहाई देना' - मुहावरे का प्रयोग किया गया है।

'को काको', 'हरि हारे', 'दाऊँ दियौ' में अनुप्रास अलंकार है।

अभ्यास कार्य

व्याख्या

''खेलन में को काको गुसैयाँ .... करि नन्द दुहैयाँ।

बौद्धिक प्रश्न :

1. प्रस्तुत पद में किस भाव का चित्रण है?
2. खेल में कौन जीता और कौन हारा?
3. कृष्ण क्यों रूठ जाते हैं?
4. श्रीदामा जीतने पर क्या कहते हैं?
5. मित्र, कृष्ण की बात न मानने का क्या तर्क देते हैं?
6. खेल में किस चीज का स्थान नहीं है?
7. कृष्ण किसकी दुहाई देते हैं?
8. कृष्ण अपनी हार क्यों स्वीकार कर लेते हैं?
9. हार स्वीकार करने के उपरान्त कृष्ण क्या करते हैं?
10. प्रस्तुत पद की भाषा कौन-सी है?

पद-2

''मुरली तऊ गुपालहिं .... सीस डुलावति''

कवि - सूरदास

मूल भाव - कवि सूरदास के प्रस्तुत पद में कृष्ण के प्रति गोपियों के अनन्य प्रेम की अभिव्यक्ति है। मुरली के प्रति गोपियाँ ईर्ष्या भाव रखती हैं।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

व्याख्या बिन्दु – प्रस्तुत पद में श्रृंगार के वियोग पक्ष का चित्रण है। गोपियों का कहना है कि मुरली के कारण ही उन्हें कृष्ण का सान्निध्य प्राप्त नहीं होता। मुरली कृष्ण से अनेकानेक कार्य करवातीं है। वह कृष्ण की अधर-सेज पर विश्राम करती है और सुकुमार कृष्ण से अपनी प्रत्येक आज्ञा का पालन करवाती है।

मुरली की आज्ञापालन में कृष्ण की त्रिभंगी मुद्रा बन जाती है।

गिरिधर (पर्वत उठाने वाले) कृष्ण का सिर भी मुरली के समक्ष झुक जाता है।

गोपियों का मानना है कि कृष्ण मुरली के अधीन हैं।

गोपियाँ यह भी मानती हैं कि मुरली के कारण ही कृष्ण उन पर क्रोधित होते हैं।

समस्त गोपियाँ मुरली (बाँसुरी) तथा कृष्ण को साथ देखकर मुरली के प्रति ईर्ष्या भाव रखती हैं।

उन्हें कृष्ण और मुरली का साथ-साथ होना कष्ट देता है।

सम्पूर्ण पद में माधुर्यगुण युक्त ब्रज भाषा है।

श्रृंगार रस का चित्रण है।

तुकात्मकता और लय के कारण गीति तत्व विद्यमान है।

मुरली का मानवीकरण किया गया है।

'साज-सज्जा', 'कोप करावति' में अनुप्रास अलंकार है।

'अधर-सज्जा', 'कर-पल्लव' – में रूपक अलंकार है।

'गिरिधर नार नवावति' में – श्लेष अलंकार है।

गोपियों की मनोदशा का स्वाभाविक चित्रण किया गया है।

अभ्यास कार्य

व्याख्या

"मुरली तऊ गुपालहिं .... सीस डुलावति"

काव्य सौन्दर्य

"कोमल तन आज्ञा करवावति, कटि टेढ़ौ ह्वै आवति।
अति आधीन सुजान कनौड़े, गिरिधर नार नवावति।।"

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

बौद्धिक प्रश्न :

1. मुरली के प्रति गोपियों का क्या भाव है?
2. सखियाँ आपस में क्या बात करती हैं?
3. मुरली कृष्ण से क्या-क्या कार्य कराती हैं?
4. गोपियों को ऐसा क्यों लगता है कि मुरली ही कृष्ण के क्रोध का कारण है?
5. कृष्ण की किस मुद्रा का उल्लेख है?
6. अधर को सेज क्यों कहा गया है?
7. 'कर-पल्लव पलुटावति' का आशय स्पष्ट करें।
8. "भृकुटी कुटिल, नैन नासा पुट", में कौन सा भाव व्यक्त हुआ है?
9. पद की भाषा कौन सी है?
10. इस पद में कौन सा रस है?

www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

पाठ-3 कवि देव

हँसी की चोट, सपना, दरबार

कवि - देव (रीतिकालीन कवि)

रचनाएँ - रामविलास, भाव विलास, भवानी विलास, राग रत्नाकर, अष्टयाम, प्रेमदीपिका

काव्यगत विशेषताएँ-

देव प्रेम और प्राकृतिक सौन्दर्य के कवि हैं। माधुर्य गुण युक्त कोमल ब्रज भाषा रागात्मक भावनाओं के लिए सर्वथा उपयुक्त है। देव के काव्य में संवेदनशीलता है। अलंकारों का अत्यंत सहज व स्वाभाविक प्रयोग काव्य सौन्दर्य में श्रीवृद्धि कर रहा है। देव के काव्य में मुहावरेदार भाषा के दर्शन होते है।

देव ने प्रकृति का सजीव एवं चित्रात्मक वर्णन प्रस्तुत किया है। अपनी रचनाओं में कवि देव ने श्रृंगार का उदात्त रूप प्रस्तुत किया है।

पद-1

'हँसी की चोट' -

साँसनि ही सौं .... हरि जूहरि।।

कवि - देव

छंद - सवैया

मूल भाव - प्रस्तुत सवैया गोपियों की विरह दशा का अतिश्योक्तिपूर्ण वर्णन है। कृष्ण से मिलने की उत्कट इच्छा की अभिव्यक्ति है।

व्याख्या बिन्दु- कृष्ण के मथुरा जाने के उपरान्त गोपियाँ हँसना भूल गई हैं अर्थात् सदा दुखी और व्याकुल रहती हैं।

कृष्ण के वियोग में गोपियों की विरह दशा का चित्रात्मक वर्णन किया गया है।

विरह की व्याकुलता के कारण शरीर के पाँच तत्वों में से मात्र आकाश तत्व शेष है।

विरह की व्याकुलता के कारण श्वास की गति में वृद्धि होने के कारण (साँस तेज चलना) वायु

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

तत्व का ह्रास हो गया है।

निरन्तर अश्रु बहने से (रोने से) शरीर से जल तत्व निकल गया है।

शरीर के दुर्बल होने से भूमि तत्व समाप्त हो गया है।

मुख के तेजहीन होने से अग्नि तत्व का क्षीण होना दर्शाया गया है।

मिलन की आशा के कारण केवल आकाश तत्व शेष है।

कृष्ण के जाने पर गोपियों का हृदय उनके साथ चला गया। कृष्ण ने उनके हृदय का हरण कर लिया है।

गोपियाँ अत्यंत व्याकुल हैं तथा कृष्ण को प्रतिपल ढूँढ़ती रहती हैं। उन्हें मिलन की आकांक्षा है।

छन्द सवैया है।

श्रृंगार रस के वियोग पक्ष (विप्रलंभ श्रृंगार) का चित्रण है।

तुकात्मकता और माधुर्य गुण दृष्टव्य है। तन की तनुता, हरै हंसि, हेरि हियो में अनुप्रास अलंकार है।

'मुख फेर लेना' मुहावरे का प्रयोग किया गया है।

'हेरि हियो जु लियो हरि जू हरि' में यमक अलंकार है।

अभ्यास कार्य

व्याख्या कार्य

"साँसनि ही सौं समीर .... हरि जू हरि"

काव्य सौन्दर्य

"जा दिन तै मुख फेरि हरै हंसि, हेरि हियो जु लिया हरि जू हरि"

बौद्धिक प्रश्न :

1. गोपियों की किस दशा का वर्णन किया गया है?
2. गोपियों की इस दशा का कारण क्या है?
3. उपर्युक्त सवैये में किन पाँच तत्वों का उल्लेख किया गया है?
4. पाँच में से कौन-सा तत्व शेष है और क्यों?
5. प्रस्तुत छन्द कौन-सा है तथा इसमें कौन-सा रस है?
6. गोपियों की दशा का वर्णन किस प्रकार किया गया है?
7. चार तत्व कैसे क्षीण हो रहे हैं?
8. गोपियों का हृदय किसके साथ चला गया?
9. गोपियाँ क्या भूल गई हैं और क्यों?
10. 'हेरि हियो जु लियो हरि जू हरि' में कौन-सा अलंकार है?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

सपना

झहरि-झहरि झीनी .... ह्वै दृगन में

कवि – देव (रीतिकालीन कवि)

छन्द – कवित्त

काव्यगत विशेषताएँ-

मूल भाव – प्रस्तुत सवैये में श्रृंगार के दोनों पक्षों (संयोग एवं वियोग) का वर्णन है एक गोपी के कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम को दर्शाया गया है।

व्याख्या बिन्दु

वर्षा ऋतु का वर्णन है। वर्षा हो रही है, आकाश में काली घटा है। निद्रामग्न गोपी स्वप्न देख रही है। स्वप्न में कृष्ण उससे झूला झूलने का आग्रह कर रहे हैं। गोपी यह सुनकर अत्यधिक प्रसन्न हो जाती है। झूला झूलने के लिए उठने लगी थी कि उसकी नींद टूट जाती है। कृष्ण के सान्निध्य का स्वप्न भंग हो गया। जागृत अवस्था में वह पाती है कि आकाश में न तो बादल हैं और न ही घनश्याम (कृष्ण)।

उसे प्रतीत होता है कि जागने पर उसका भाग्य सो गया। जागृत अवस्था को वह अपना दुर्भाग्य मानती है यह उसे कष्टदायी प्रतीत होता है। निद्रा का संयोग जागृत अवस्था में विरह दशा में परिवर्तित हो जाता है। वर्षा की बूँदे अश्रु बनकर उसकी आँखों में उतर गईं।

प्रस्तुत छन्द कवित्त हैं इसमें श्रृंगार के दोनों पक्षों (संयोग और वियोग) का चित्रण है। कोमलकांत ब्रज भाषा का प्रयोग, तुकात्मकता दृष्टव्य है। 'निगोड़ी नींद' में अनुप्रास अलंकार है। 'झहरि-झहरि', 'घहरि-घहरि' में पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार है। ''सोए गए भाग मेरे जानि वा जगन में – विरोधाभास अलंकार है। कवि ने 'फूला न समाना' मुहावरे का प्रयोग किया है।

अभ्यास कार्य

व्याख्या

''झहरि-झहरि झीनी .... ह्वै दृगन में'' की सप्रसंग व्याख्या करें।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

प्रसंग- प्रस्तुत पंद्याश 'सपना' से लिया गया है। इसके रचयिता रीतिकालीन कवि देव हैं। इसमें कवि ने श्रृंगार के संयोग और वियोग पक्षों का चित्रण एक साथ किया है।

व्याख्या- गोपी नींद में स्वप्न देख रही है। आकाश में काले बादल घिरे हुए हैं। वर्षा हो रही है। इस मनभावन वातावरण में कृष्ण उसे अपने साथ झूला झूलने के लिए कह रहे हैं। यह सुनकर वह अत्यधिक प्रसन्न हो जाती है। वह कृष्ण के साथ जाने के लिए उठने ही लगती है कि उसकी नींद टूट जाती है। नींद टूट जाने पर श्री कृष्ण के सान्निध्य का स्वप्न भंग हो जाता है। वह अपने इस स्वप्न भंग से दुखी होती है। जागृत अवस्था में कृष्ण का न होना उसके लिए कष्टदायक है।

वह कहती है कि मेरे जागने से मेरा भाग्य सो गया अर्थात् कृष्ण का साथ छूट गया। नींद टूटने पर उसे ज्ञात होता है कि वहाँ न बादल हैं और न ही कृष्ण। उसे ऐसा प्रतीत होता है कि वर्षा की बूँदें आँसू बन कर उसकी आँखों में आ गई हैं।

शिल्प सौन्दर्य- कवि ने ब्रजभाषा का प्रयोग किया है।

श्रृंगार के दोनों पक्षों (संयोग व वियोग) को एक साथ दर्शाया है।

कोमलकांत पदावली का प्रयोग किया है।

चित्रात्मकता, तुकात्मकता है।

गेयता का गुण विद्यमान है।

पुनरुक्तिप्रकाश, अनुप्रास, उत्प्रेक्षा, मानवीकरण अलंकारों का सहज प्रयोग किया गया है।

अनुप्रास - 'निगोड़ी नींद', 'झहरि-झीनी'

पुनरूक्ति प्रकाश - 'झहरि - झहरि', 'घहरि - घहरि'

मुहावरा - 'फूला न समाना'

उत्प्रेक्षा - ' झहरि-झहरि झीनी बूँद परति मानो
घहरि - घहरि घटा घेरी है गगन में'

मानवीकरण - ' सोए गए भाग मेरे'

काव्य-सौन्दर्य

''झहरि-झहरि झीनी .... दृगन में।''

भाव-सौन्दर्य

प्रस्तुत पंक्तियों में श्रृंगार के संयोग और वियोग पक्ष का चित्रण निद्रा में स्वप्न और स्वप्न-भंग के माध्यम से दर्शाया है। कृष्ण के प्रति गोपी की प्रेम-भावना को व्यक्त किया है।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

शिल्प-सौन्दर्य -

भाषा - ब्रज

रस - श्रृंगार

गुण - माधुर्य, चित्रात्मकता, लय एवं तुकात्मकता।

अलंकार - उत्प्रेक्षा, मानवीकरण, अनुप्रास।

कवि-परिचय

कवि परिचय का प्रश्न 5 अंक का है।

इसे तीन उपशीर्षकों में देना अनिवार्य है:-

(1) किस काल के कवि हैं तथा जीवन-परिचय

(2) रचनाएँ

(3) काव्यगत विशेषताएँ

काव्य-सौन्दर्य

''झहरि-झहरि झीनी बूँद है परति मानो
घहरि-घहरि घटा घेरी है गगन में''

बौद्धिक प्रश्न :

1. 'सपना' में गोपी की किन दो अवस्थाओं का चित्रण है?
2. गोपी क्या स्वप्न देख रही है?
3. 'सपना' में कौन सी ऋतु का वर्णन है?
4. नींद टूटने से भाग सो जाने का क्या आशय है?
5. नींद को निगोड़ी क्यों कहा गया है?
6. स्वप्न टूटने पर गोपी ने क्या अनुभव किया?
7. ''वेई छाई बूँदे मेरे आँसु है दृगन में'' का आशय स्पष्ट करें।
8. उपर्युक्त छन्द कौन सा है तथा इसमें किस रस का चित्रण है?
9. प्रस्तुत छन्द की भाषा के दो गुण लिखें।
10. ''उठि गई सो निगोड़ी नींद
सोए गए भाग मेरे''

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

इन पंक्तियों में अलंकार स्पष्ट करें

11. फूला न समाना एक .... है

दरबार

कवि – देव

छन्द – सवैया

मूल भाव – कवि ने दरबारी तथा सामंती वातावरण पर व्यंग्य किया है। कवि ने इसमें दर्शाया है कि दरबारी वातावरण में विवेक के स्थान पर चाटुकारिता का प्राधान्य रहता है।

व्याख्या बिन्दु –

देव ने यह दर्शाया है कि दरबारी वातावरण में दरबारी निष्क्रिय और अकर्मण्य हो गए है। वह अंधे, बहरे और गूँगे बनकर केवल दर्शक है। राजा भी वस्तुस्थिति से अनभिज्ञ (अनजान) बना रहता है। दरबारी और राजा दोनों भोगविलास, रागरंग में लीन रहते हैं। सब केवल अपनी स्वार्थ पूर्ति में लगे रहते हैं। दूसरों के विषय में सोचते ही नहीं है। बुद्धि और विवेक भ्रष्ट हो चुका है। लोग (प्रजा) दिन रात भोग विलास की भौतिक सुख-सुविधा की सामग्री एकत्र करने में लगे रहते हैं। भौतिक सुख सुविधाओं के पीछे लोग नट की भांति नाचते हैं। अपनी बुद्धि, विवेक का प्रयोग नहीं करते। इस प्रकार के वातावरण में बुद्धि, काव्य एवं कला का कोई मोल नहीं है। यह वातावरण काव्य एवं कला की अनुभूति तथा अभिव्यक्ति के मार्ग में बाधक है, सर्वथा अनुपयुक्त है। देव का अधिकांश जीवन राजाश्रय में व्यतीत हुआ। इस पद में उन्होंने दरबारी जीवन के तीखे एवं कटु यथार्थ को अभिव्यक्त किया है। अनुभव की प्रामाणिकता र्स्वत्र दृष्टव्य है। देव की काव्यभाषा ब्रज है 'सवैया' छन्द का प्रयोग किया गया है। 'रुचि राच्यो', 'निसि नाच्यो' में अनुप्रास अलंकार है।

अभ्यास कार्य

बौद्धिक प्रश्न :

1. 'दरबार' की भाषा कौन सी है तथा यह किस छन्द में रचित है?
2. 'दरबार' में किस प्रकार के वातावरण को दर्शाया गया है?
3. राजा और दरबारी दोनों कैसे हैं?
4. दरबारी किस में लीन है?
5. ऐसा क्यों कहा गया है कि लोगों की मति भ्रष्ट हो गई है?
6. काव्य और कला की पहचान को किस प्रकार अनदेखा किया जाता है?
7. 'सगरी निसि नाच्यो' का आशय स्पष्ट करें।
8. 'दरबार' का मूल भाव लिखें।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

पाठ–4 पद्माकर

रीतिकालीन कवि पद्माकर

रचनाएँ – विरुदावली, पद्माभरण, राम रसायन, गंगा लहरी, हिम्मतबहादुर, विरूदावली

'कविराज शिरोमणि' की उपाधि से सम्मानित

काव्यगत विशेषताएँ–

कवि पद्माकर रीतिकालीन कवि हैं। उनकी भाषा माधुर्य गुण युक्त ब्रज भाषा है। अपनी अधिकतर रचनाओं में उन्होंने प्रेम और सौन्दर्य का सजीव चित्रण किया है। पद्माकर के ऋतु वर्णन में चित्रात्मकता और अपूर्व बिम्ब योजना के दर्शन होते हैं।

अलंकारिता उनके काव्य का प्रधान गुण है। अलंकार, विशिष्ट अधिक प्रयोग में उनका काव्य अपूर्व है। भाषा भावानुकूल और शब्द चयन विषयानुकूल हैं। लाक्षणिक शब्द प्रयोग सूक्ष्म अनुभूतियों को सहज ही प्रस्तुत करता है। भाषा में प्रवाह तथा गति है। पद्माकर ने अधिकांशतः कवित्त और सवैया छन्द का प्रयोग किया है।

कवित्त–1

''औरै भांति कुंजन .... बन ह्वै गए।।''

कवि – पद्माकर

छन्द – कवित्त

मूल भाव – बसंत ऋतु के आगमन का चित्रण किया है। ऋतुराज के प्राकृतिक सौन्दर्य का तथा नवयुवकों एवं पक्षी–समाज पर पड़ने वाले उसके प्रभाव का चित्रात्मक वर्णन किया है।

व्याख्या बिन्दु –

ऋतुराज वसंत की मादकता का मनोहारी चित्रण किया है। वसंत के आगमन से प्रकृति की शोभा में, वातावरण में वृद्धि होती है। समस्त प्रकृति राग, रस और रंग से पूरित हो उठती है। मन व शरीर में उत्साह का संचार होता है। वसंत ऋतु एक अलग ही प्रकार का चमत्कारपूर्ण प्राकृतिक परिवर्तन

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

और सौन्दर्य लेकर आती है।

कवित्त की भाषा ब्रज है। भाषा में तुकात्मकता और माधुर्य गुण दृष्टव्य है वसंत ऋतु का मनभावन चित्रण, अलंकारों एवं शब्दावृत्ति से प्रभावी बन गया है। 'औरै' शब्द की आवृत्ति से काव्य में चमत्कार उत्पन्न हो गया है।

अभ्यास कार्य

व्याख्या

''औरै भांति .... बन ह्वै गए।''

काव्य सौन्दर्य

''औरै भांति .... औरै छवि ह्वै गए।।''

बौद्धिक प्रश्न :

1. किस ऋतु का चित्रण किया गया है?
2. इस ऋतु के आगमन से किस किस पर क्या-क्या प्रभाव पड़ता है?
3. 'ऋतुराज' शब्द का प्रयोग किस के लिए किया गया है और क्यों?
4. 'ऋतुराज' के आगमन से प्रकृति में क्या परिवर्तन होते हैं?
5. 'औरै भांति' की आवृत्ति से काव्य में उत्पन्न चमत्कार को स्पष्ट करें।
6. 'छलिया छबीले छैल औरै छवि ह्वै गए'' में अलंकार स्पष्ट करें।

कवित्त-2

''गोकुल के कुल .... निचोरत बनै नहीं।।''

कवि-पद्माकर

छन्द-कवित्त

मूल भाव - होली के त्योहार के माध्यम से कृष्ण के प्रति गोपियों के प्रेम को चित्रित किया है। स्याम रंग (कृष्ण प्रेम) में डूबी गोपी इस रंग को सदा अपने साथ रखना चाहती है।

व्याख्या बिन्दु-

होली के त्योहार का वर्णन है गोपियाँ लोक निंदा की परवाह किए बिना 'स्याम रंग' में कृष्ण के प्रेम के रंग से स्वयं को मुक्त नहीं करना चाहतीं। होली के अवसर पर सब त्योहार की मस्ती में

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

मग्न हैं लोग (गोपियाँ, ग्वाल-बाल) इतने मग्न हैं कि सभी ने लाज त्याग दी है।

दूसरे को रंगने और स्वयं को बचाने के लिए सब इधर उधर भाग रहे हैं। इस खेल में एक गोपी श्याम रंग में डूब गई। सखियों के कहने पर भी उसने अपने कपड़े नहीं निचोड़े। वह 'स्याम रंग' अर्थात् कृष्ण प्रेम को अपने से अलग नहीं कर सकती। उसका हृदय तो श्याम (कृष्ण) ने हर लिया है। कृष्ण प्रेम में डूबी गोपिका का मानना है कि कपड़ों का श्याम रंग निचोड़ने पर उससे कृष्ण-प्रेम छूट जाएगा।

भाषा ब्रज है। कोमलकांत पदावली माधुर्य गुण से युक्त है। काव्य में प्रवाह और चित्रात्मकता है। 'स्याम रंग' में श्लेष अलंकार है। 'गोप गाउन', 'परोस पिछवारन', 'चुराई चित्त', में अनुप्रास अलंकार का चमत्कार दृष्टव्य है।

अभ्यास कार्य

व्याख्या

''गोकुल के कुल .... निचोरत बनै नहीं।''

काव्य सौन्दर्य

'हों तो स्याम रंग में चुराई चित चोराचोरी

बोरत तौं बोरयौ पै निचोरत बनै नहीं।

बौद्धिक प्रश्न :

1. कवित्त में किस त्योहार का चित्रण है?
2. इस त्योहार का लोगों पर क्या प्रभाव पड़ता है?
3. गोपी कौन-से रंग में डूबी है?
4. गोपी क्या नहीं करना चाहती और क्यों?
5. होली के अवसर पर लोग क्या त्याग देते हैं?
6. पद्माकर की भाषा कौन सी है?

कवित्त-3

''भौंरन को .... सुहावनो लगत है।''

कवि - पद्माकर

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

छन्द - कवित्त

मूल भाव - प्रस्तुत कवित्त में वर्षा ऋतु के सौन्दर्य एवं इस ऋतु में होने वाले प्राकृतिक परिवर्तन का चित्रण किया है।

वर्षा ऋतु के मनभावन रूप का वर्णन कवि ने सुन्दर चित्रात्मक शब्दों में किया है।

व्याख्या बिन्दु -

वर्षा ऋतु के आगमन से सम्पूर्ण वातावरण भौंरो की गुंजन से गूँज उठता है। ऐसा प्रतीत होता है कि कोई मल्हार राग गा रहा हो। वर्षा ऋतु में मेघ पानी के साथ साथ प्रेम की वर्षा भी करते हैं। हृदय में प्रेम भावना जागृत होती है।

इस समय नायिका को अपना प्रियतम सर्वाधिक प्रिय प्रतीत होता है। नायिका अपने प्रियतम का सान्निध्य चाहती है। समस्त वातावरण बादलों की गर्जन तथा मोर के कलरव से पूरित है। इस मनमोहक वातावरण में नायिका झूला झूलना चाहती है।

वर्षा ऋतु का सुन्दर चित्रण है। कवित्त की भाषा ब्रज है। इसमें माधुर्यगुण एवं लय का समावेश है। 'मंजुल मलारन', 'छवि छावनों' में अनुप्रास अलंकार है।

अभ्यास कार्य

व्याख्या

''भौरंन को गुंजन .... सुहावनो लागत है।''

काव्य सौन्दर्य

'कहैं पद्माकर गुमानहूँ तैं मानहुँ तै
प्रानहूँ तैं प्यारो मनभावनो लागत है।'

बौद्धिक प्रश्न :

1. प्रस्तुत कवित्त में किस ऋतु का वर्णन किया गया है?
2. सावन के आगमन पर प्रकृति में होने वाले परिवर्तनों का उल्लेख करें।
3. 'प्राणों से प्रिय' का प्रयोग किसके लिए किया गया है?
4. सावन में मेघ पानी के साथ साथ और क्या बरसाते हैं?
5. कवि ने सावन की किन विशेषताओं का चित्रण किया है?
6. प्रियतम के विषय में क्या कहा गया है?
7. प्रस्तुत पद की भाषा कौन सी और कैसी है?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

पाठ–5

कवि – सुमित्रानंदन पंत (मूलतः छायावादी काव्यधारा के कवि)

रचनाएँ – वीणा, ग्रंथि, ग्राम्या, पल्लव, गुंजन, उत्तरा, लोकायतन (महाकाव्य)

पुरस्कार – सोवियत लैंड नेहरू, साहित्य अकादमी, भारतीय ज्ञानपीठ

काव्यगत विशेषताएँ–

पंत जी मूलतः छायावादी काव्यधारा के कवि हैं। प्रकृति प्रेम एवं सौन्दर्य के कवि पंत जी के काव्य में कल्पनाशीलता, प्रवाह, गति एवं भावुकता है। भाषा तत्सम प्रधान खड़ी बोली है। भाव और विषयानुकूल, उर्दू, फारसी, सामान्य आंचलिक भाषा का प्रयोग मिलता है। प्रकृति के अनेकानेक रूपों, उसके पल-पल परिवर्तनशील सौन्दर्य का चित्रात्मक वर्णन किया है। अनूठी बिम्ब योजना और तुकात्मकता पंत जी के काव्य की विशेषताएँ हैं।

छायावादी काव्यधारा के कवि पंत जी के काव्य में रस, छन्द, अलंकार आदि विशिष्ट भाषिक प्रयोग एवं भावना का अद्भुत सामंजस्य है। गीतात्मक शैली में रचित काव्य, अधिकांशतः श्रृंगार एवं करुण रस प्रधान है। उपमा, रूपक, मानवीकरण इत्यादि अलंकारों के संयोजन से काव्य सौन्दर्य में वृद्धि तथा भाषिक चमत्कार को देखा जा सकता है। शब्दों का भावानुकूल एवं विषयानुकूल चयन शब्द शिल्पी पंत के काव्य में सर्वत्र दृष्टव्य है।

कविता – संध्या के बाद

कवि – सुमित्रानंदन पंत

मूल भाव – प्रस्तुत कविता में ग्रामीण जन जीवन के सामाजिक यथार्थ को अभिव्यक्त किया गया है। संध्या समय होने वाले प्राकृतिक परिवर्तनों, ग्राम्य जीवन के दैनिक कार्य व्यापार को वर्णित किया गया है। कविता के माध्यम से मानवता का संदेश दिया गया है। एक नई सामाजिक व्यवस्था और समता की आवश्यकता की ओर संकेत किया गया है।

शोषण से, दरिद्रता से मुक्ति की कामना है। गाँव में व्याप्त दुःख, दैन्य, उत्पीड़न, निराशा का करुण एवं भावपूर्ण चित्र उकेरा है।

व्याख्या बिंदु– प्रस्तुत कविता पंत जी द्वारा रचित 'ग्राम्या' संकलन से ली गई है।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

'संध्या के बाद' में ग्रामीण परिवेश का चित्रण किया है। प्रकृति पर संध्याकालीन लालिमा के प्रभाव को अत्यन्त चित्रात्मक ढंग से दर्शाया है। कवि ने संध्या का चित्रण पक्षी रूप में किया है। (सिमटा पंख सांझ की लाली) झरनों का शतमुखी स्वरूप, गंगाजल का चितकबरा होना, रेत पर धूप-छांह का खेल आदि प्राकृतिक परिवर्तनों को बिम्बों द्वारा दर्शाया है। संध्या के समय, बस्ती मंदिर के घंटों तथा शंख ध्वनि से पूरित हो उठती है। संध्या की आभा का सुन्दर वर्णन है।

दैनिक कार्य व्यापार समाप्त कर घर लौटे थके व्यापारियों और कृषकों का वर्णन है। गाड़ियों और गाय के कारण पूरा वातावरण धूल से भर उठता है। धीरे-धीरे पूरी बस्ती अंधकार में डूब जाती है। गाँव में दरिद्रता, उत्पीड़न और निराशा व्याप्त है। व्यक्ति (गाँव वाले) अपने दैन्य भाव को, दुःख को प्रकट करने में अक्षम हैं। उनका क्रन्दन और रुदन अनभिव्यक्त है, मूक है। इस दुःख नैराश्य को देखकर, अनुभव कर गाँव के बनिए के मन में मानवता जागृत होती है। उसे अपना जीवन असफल और निरर्थक प्रतीत होता है।

घटते प्रकाश में रात की कालिमा धीरे-धीरे गहरी होती है। प्रकृति के समस्त उपकरण अंधकार मग्न हो रहे हैं। कुत्तों के भौंकने तथा सियारों के रोने से गाँव में व्याप्त दुःख, दैन्य और उत्पीड़न मुखरित हो उठता है। घरों से उठती धूम्र-रेखा को नीले रेशम की सी जाली कहा है (उपमा) सारा वातावरण आलस्यमग्न जान पड़ता है। दुःख, गरीबी, निराशा, पीड़ा ही ग्रामीण जीवन की परिभाषा है।

कवि दरिद्रता को पाप का कारण मानते हैं। गाँव के बनिए के माध्यम से गाँववालों की दैन्य स्थिति, पाप के अंत की कामना की है। ग्रामीण जीवन की इस दशा का दोषी व्यक्ति विशेष न होकर व्यवस्था है। इसी व्यवस्था में परिवर्तन होना चाहिए। जनता को परिश्रम का फल उसके कार्य के अनुपात में मिलना चाहिए। सामाजिक समता की स्थापना की ओर संकेत किया गया है।

बनिया अपना स्वभाव (पैसे कमाना, स्वार्थ सिद्ध करना, ठगना) नहीं त्यागता। उसकी कथनी (सोच) और करनी में अन्तर है। वह अपने विचारों (सामाजिक समता, नई व्यवस्था) को अपने व्यवहार अपने आचरण में नहीं लाता। आटा लेने आई बुढ़िया का शोषण करता है। आटा कम तोलता है और पैसे पूरे लेता है। सारी बस्ती निद्रा, आलस्य और निराशा में डूब जाती है।

कविता की भाषा तत्सम प्रधान खड़ी बोली है। विषय तथा भावानुकूल, यत्र-तत्र उर्दू-फारसी, आंचलिक शब्दों एवं सामान्य बोलचाल की भाषा का प्रयोग दृष्टव्य है। रस, छन्द, अलंकार, विशिष्ट भाषिक प्रयोगों की दृष्टि से यह कविता उत्तम है।

'संध्या के बाद' प्राकृतिक सौन्दर्य और सामाजिक यथार्थ की कविता है। ग्राम्य जीवन की करुण कथा का मार्मिक वर्णन दृष्टव्य है। प्रकृति के परिवर्तनशील रूप को बिम्बों द्वारा दर्शाया गया है।

चित्रात्मक वर्णन से प्रकृति सजीव हो उठी है। उपमा, अनुप्रास तथा पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार दृष्टव्य है। दीप शिखा-सा, ज्योति स्तंभ-सा, केंचुल-सा, बगुलों-सा, स्वर्ण चूर्ण-सी, रेशम की-सी हल्की जाली आदि में उपमा अलंकार है। 'कँप कँप', 'अपनी-अपनी' में पुनरुक्तिप्रकाश, 'घुस घरौंदे', 'दैन्य दुःख', 'मौन मंद' आदि में अनुप्रास अलंकार, 'डंडी मारना' - मुहावरे का प्रयोग है।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

- सम्पूर्ण कविता में लय के कारण गेयता के दर्शन होते हैं।

अभ्यास-कार्य

व्याख्या

1. 'मन से कढ़ अवसाद श्रांति .... मूक निराशा।'
2. 'व्यवस्था में जग की .... अधिकारी धन का?'
3. 'नील लहरियों में लोड़ित .... बँधे समुज्जवल'

काव्य-सौन्दर्य

1. 'सिमटा पंख साँझ .... निर्झर।'
2. 'तट पर बगुलों-सी .... अंतर रोदन!'

बौद्धिक प्रश्न :

1. कविता में किस समय का चित्रण है?
2. गाँव का वातावरण कैसा है?
3. पंत किस प्रकार के कवि हैं?
4. पंत की भाषा पर अपने विचार व्यक्त करें।
5. 'सौ मुखों वाला' किसे और क्यों कहा गया है?
6. सिकता, सलिल तथा समीर को स्नेह सूत्र में बँधा क्यों कहा गया है?
7. वृद्धाओं और बगुलों के साम्य को स्पष्ट करें।
8. कर्म और गुण के समान वितरण, को स्पष्ट करते हुए बताएँ कि किस व्यवस्था की ओर संकेत किया गया है?
9. गाँव के बनिए के मन में कौन-सा भाव, कब और क्यों जागृत हुआ?
10. पाप का कारण किसे कहा गया है और क्यों?
11. गाँव का बनिया अपनी वृत्ति नहीं छोड़ पाता। ऐसा किस घटना से पता चलता है।
12. 'ज्योति स्तंभ-सा', 'दीप शिखा-सी', 'रेशम की-सी' जाली में कौन सा अलंकार है।
13. कवि ने बुढ़िया के शोषण को दर्शाने हेतु किस मुहावरे का प्रयोग किया है?
14. बस्ती के छोटे से गाँव के अवसाद को किन किन उपकरणों द्वारा अभिव्यक्त किया गया है?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

पाठ-6

कवयित्री - महादेवी वर्मा

कविताएँ - जाग तुझको दूर जाना
सब आँखों के आँसू उजले

महादेवी जी की प्रसिद्धि विशेषतः कवयित्री के रूप में है, परन्तु ये मौलिक गद्यकार भी हैं। महादेवी वर्मा छायावादी काव्य में एक प्रमुख स्तंभ हैं।

रचनाएँ : काव्य संग्रह- नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्यगीत और दीपशिखा

गद्य रचनाएँ - पथ के साथी, अतीत के चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ, श्रृंखला की कड़ियाँ आदि।

काव्यगत विशेषताएँ-

इनके काव्य में गीत और संगीत का सामंजस्य है। संगीतात्मकता, लाक्षणिकता, चित्रमयता और रहस्याभास, काल्पनिकता तथा प्रकृति-सौंदर्य उनके गीतों की विशेषता है। महादेवी वर्मा की कविता में बिंबों और प्रतीकों की सुन्दर योजना है। इनके काव्य में तत्सम शब्दों का अत्यधिक प्रयोग हुआ है। भाषा संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली है। प्रकृति का सुन्दर चित्रण हुआ है।

पुरस्कार : 'भारतीय ज्ञानपीठ', 'पद्मभूषण' अलंकरण से सम्मानित।

जाग तुझको दूर जाना

मूल भाव - 'जाग तुझको दूर जाना' कविता के माध्यम से कवयित्री मानव को निरन्तर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है तथा भीषण कठिनाइयों की चिंता न करते हुए अपने देश के प्रति सदैव कर्तव्यनिष्ठ रहने के लिए प्रेरित करती है।

व्याख्या बिन्दु- इस कविता में कवयित्री ने मानव को आँधी, तूफान, भूकंप की चिंता न करते हुए सांसारिक मोह-माया के बंधनों को त्याग कर समस्त सुखों, भोग-विलासों को छोड़कर, कष्टों को भूलकर कठिनाइयों का सामना करते हुए निरन्तर अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आगे बढ़ते रहने की प्रेरणा दी है।

''मोम के बंधन'' कथन से कवयित्री का आशय है कि ये बंधन मोम के समान कोमल है।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

मनुष्य को ये मानवीय रिश्ते और आपसी संबंध नहीं रोक सकते अर्थात् आजादी की लड़ाई में तुम्हें अपनों से मुँह मोड़ना होगा। 'मोम के बंधन' मानवीय रिश्तों और आपसी संबंधों के प्रतीक है।

'तितलियों के पर' का प्रयोग सुंदर युवतियों तथा ऐश्वर्यपूर्ण जिंदगी की सुख-सुविधाओं के संदर्भ में किया गया है।

कवयित्री मानव का सांसारिक मोह-माया, सुख-सुविधाओं, भोग विलास, नाते-रिश्ते आदि के बंधनों से मुक्त होकर निरंतर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते रहने के लिए जागृति का संदेश दे रही है।

कविता में 'अमरता सुत' संबोधन मानव के लिए आया है क्योंकि उसे अमर रहकर संसार के दु:खों को समाप्त करना है। इसलिए कवयित्री उसे मृत्यु के भय को हृदय में नहीं बसाने के लिए कहती हैं तथा अमरता का पुत्र बनकर समस्त कठिनाइयों से जूझते हुए आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है।

इस कविता में संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली का प्रयोग किया गया है। बिम्बों और प्रतीकों की सुंदर योजना की गई है।

प्रश्नात्मक शैली का प्रयोग किया गया है।

'जीवन-सुधा' में रूपक अलंकार, 'सो गई आंधी में' मानवीकरण अलंकार है।

अभ्यास कार्य

बौद्धिक प्रश्न :

1. 'जाग तुझको दूर जाना' कविता में कवयित्री किसको सम्बोधित कर रही है?
2. 'जाग तुझको दूर जाना' कविता में कवयित्री मानव को किन विपरीत परिस्थितियों से आगे बढ़ने के लिए उत्साहित कर रही है?
3. 'मोम के बंधन' और तितलियों के पर' का प्रयोग कवयित्री ने किस संदर्भ में किया है और क्यों?
4. कविता में 'अमरता-सुत' का संबोधन किसके लिए और क्यों आया है?
5. 'जाग तुझको दूर जाना' कविता की मूल संवेदना अपने शब्दों में लिखिए।
6. 'नाश पथ पर अपने चिह्न छोड़ना' किसको संबोधित है?
7. 'तू न अपनी छांह को अपने लिए कारा बनाना' का क्या आशय है?

व्याख्या

'बाँध लेंगे क्या तुझे .... उर में बसाना?'

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

'कह न ठंडी सांस में .... कलियाँ बिछाना!'

काव्य सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए

'विश्व का क्रंदन .... अपने लिए कारा बनाना।'

कविता – 'सब आँखों के आँसू उजले'

मूल भाव – 'सब आँखों के आँसू उजले' में प्रकृति के उस स्वरूप की चर्चा हुई है जो सत्य है, यथार्थ है और जो लक्ष्य तक पहुँचने में मनुष्य की मदद करता है। जीवन की सच्चाई को प्रकृति के माध्यम से अभिव्यक्त किया है।

व्याख्या बिन्दु-

कवयित्री ने 'आँसू' के लिए 'उजले' विशेषण का प्रयोग इसलिए किया है क्योंकि वे मन की सत्य भावनाओं के प्रतीक हैं। दु:ख और सुख मिलने पर स्वयं ही मनुष्य की आँखों से छलछला आते हैं।

सपनों को सच बनाने के लिए मनुष्य को जीवन में आने वाली कठिनाइयों, सुख-दु:खों का साहसपूर्वक सामना करना चाहिए। दीपक की भांति जलने और फूल की तरह खिलना चाहिए।

'नीलम' का रंग नीला होता है। यहाँ कवयित्री ने इसे नीले आकाश के सन्दर्भ में प्रयुक्त किया है और 'मरकत' का आशय पन्ना है जिसके हरे रंग के कारण उसे हरी-भरी पृथ्वी के सन्दर्भ में प्रयुक्त किया गया है। आशय है कि नीले आकाश और हरी पृथ्वी के संपुट (फलक) के मध्य प्राणियों के जीवन रूपी मोती का निर्माण होता है।

कवयित्री ने जीवन के सत्यों को प्रकृति के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। कवयित्री ने प्रकृति के उपादानों के माध्यम से स्वप्न बुने हैं और इन स्वप्नों में सत्य को उद्घाटित किया है। फूलों में मकरंद भरना, सूर्य के प्रकाश से संसार को आलोकित करना, झरने का बहना, दीपक का जलकर सृष्टि को उजाला प्रदान करना तथा फूलों की सुगंध बिखेर कर संसार को सुगंध से भर देना प्रकृति के स्वप्न है जिन में सत्य निहित होता है।

झरने में अमृत की धारा बहती है और पानी से मोती निकलता है। इसी प्रकार व्यक्ति के हृदय से, आँखों से जो आँसू निकलते हैं वे मोती के समान पवित्र और चमकदार होते हैं।

कविता में वर्णनात्मक शैली है, छायावादी प्रभाव स्पष्ट है।

तत्सम और तद्भव शब्दों का प्रयोग है।

पुनरूक्तिप्रकाश, उपमा और विरोधाभास अलंकारों का प्रयोग है।

भाषा सरल, सहज और बोधगम्य है।

लाक्षणिकता दृष्टव्य है।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

अभ्यास कार्य

व्याख्या

निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) 'आलोक लुटाता वह .... कब फूल जला'

(ख) 'नभ तारक-सा .... हीरक पिघला?'

काव्य सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए

'संसृति के प्रति पग में मेरी .... एकाकी प्राण चला'

बौद्धिक प्रश्न :

1. महादेवी वर्मा ने 'आँसू के लिए उजले' विशेषण का प्रयोग किस संदर्भ में किया है और क्यों?
2. सपनों को सत्यरूप में ढालने के लिए कवयित्री ने किन यथार्थपूर्ण स्थितियों का सामना करने को कहा है?
3. प्रकृति किस प्रकार मनुष्य को उसके लक्ष्य तक पहुँचाने में सहायक सिद्ध होती है?
4. 'सपने-सपने में सत्य ढला' पंक्ति के आधार पर कविता की मूल संवेदना अपने शब्दों में लिखिए।
5. 'निर्झर' 'क्षुर-धारा' और 'मोती' को महादेवी ने किस तरह आँसू से जोड़ा है?
6. 'सब आँखों के आँसू उजले' कविता के अन्त में कवयित्री क्या कामना करती है?
7. कवयित्री ने किसके माध्यम से जीवन की सच्चाई को प्रस्तुत किया है?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

पाठ-7

कवि - नरेंद्र शर्मा

कविता - नींद उचट जाती है

रचनाएँ - काव्य संग्रह- प्रभात फेरी, प्रवासी के गीत, पलाशवन, मिट्टी और फूल, हंसमाला, रक्तचंदन आदि हैं।

खंडकाव्य - द्रौपदी

काव्यगत विशेषताएँ-

इनका आगमन छायावादी कवि के रूप में हुआ और धीरे-धीरे प्रगतिशील रचनाओं की ओर मुड़ गए। नरेंद्र शर्मा मूलत: गीतकार हैं। प्रगतिवादी चेतना से प्रभावित होने के कारण राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय रहे। इनकी भाषा सरल एवं प्रवाहपूर्ण है। संगीतात्मकता और स्पष्टता उनके गीतों की विशेषता है। कविता में तत्सम, तद्भव, देशज तथा अरबी, फारसी सभी प्रकार के शब्दों का प्रयोग सहजता के साथ हुआ है। गीतिका, हरिगीतिका प्रिय छंद रहे। जनमानस की भाषा का प्रयोग किया है। प्रिय अलंकार-उपमा, रूपक, अन्योक्ति, उत्प्रेक्षा, मानवीकरण।

मूल भाव - कविता मेंएक ऐसी लम्बी रात का वर्णन किया है जिसमें कवि को डरावने सपने आते हैं तथा रात समाप्त होने का नाम नहीं ले रही। कवि को प्रकाश की कोई किरण भी नहीं दिखाई दे रही है। यह अँधेरा दो स्तरों पर है-व्यक्ति के स्तर पर स्वप्न और निराशा का है, समाज के स्तर पर विकास, चेतना और जागृति के न होने का अँधेरा है। कवि जागरण के द्वारा इन दोनों अँधेरों को दूर करने और प्रकाश लाने की बात करता है। सामाजिक अव्यवस्था, कुरीतियों के कारण कवि के अंतर्मन में बेचैनी है। इनके काव्य में वैयक्तिकता तथा निराशा का स्वर है। कवि व्यक्तिगत जीवन की निराशा तथा सामाजिक जीवन के यथार्थ की विषमताओं के अंधकार से जूझता नजर आता है।

व्याख्या बिन्दु-

1. कवि ने भीतर के डरावने सपनों से अधिक भयानक, समाज में व्याप्त कुव्यवस्था एवम् कुरीतियों को माना है। संसार में खुशहाली कब होगी यही सोचकर कवि का मन बेचैन है।

2. अन्दर का भय कवि की चेतना पर इस कदर हावी है कि बाहर सुनहरी भोर होने पर भी वह उससे मुक्त नहीं हो पाता और उसकी मनःस्थिति निराशापूर्ण बनी रहती है।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

3. सांसारिक दु:खों के कारण कवि सो नहीं पाते। कवि को आशा है कि सुबह का प्रकाश न केवल कवि के दु:ख को बल्कि सांसारिक दु:खों को भी समाप्त कर देगा।

4. समाज में चेतना ओर जागृति न पाकर, व्यवस्था परिवर्तन में असमर्थ अर्थात् परिवर्तन न कर सकने से व्याकुल होकर कवि चेतन से जड़ होने की बात कहता है।

5. संसार में विषमता रूपी अंधकार की परतें इतनी जटिल हो गयी है कि उसे दूर करने की आशा रूपी ज्योति पृथ्वी का चक्कर लगाती बेबस घूम रही है वह चाहकर भी उस निराशारूपी अंधकार में प्रवेश नहीं कर पा रही।

6. कवि का मानना है कि रात भर करवटें बदलने के कारण जब नींद खराब हो जाती है, वे आँखे खोलना चाहते हैं। आँखे खोलने पर सांसारिक दु:ख उनकी आँखों के सामने चक्कर काटने लगते हैं। इसलिए कवि कहते हैं मेरे अंतर्नयनों के आगे से शिला न तम की हट पाती है।

7. बाहर के डरावने अंधेरे को देखकर कवि की आँखें दु:खने लगती हैं। गहरे और सुनसान अँधेरे में कुत्ते के भौंकने की और गीदड़ की डरावनी की आवाज़ से रात अधिक भयानक लगती है। सुख के क्षण दूर होते चले जाने के कारण इन्हीं सुखी क्षणों की ओर अधिक प्रतीक्षा करनी पड़ती है।

8. कवि का 'जागृति' से अभिप्राय सामाजिक चेतना, से है। 'अनिद्रा' से आशय व्याकुल मन: स्थिति के कारण नींद न आना तथा 'भव-निशा अंधेरी' से अभिप्राय संसार में व्याप्त निराशा, भय एवं आशंका की अंधियारी रात से है।

9. सामाजिक व्यवस्था के कारण कवि के अंतर्मन में बेचैनी है। कविता में तत्सम एवम् तद्भव शब्दों का मिश्रण है।

10. गेय एवं लयात्मकता है

11. भाषा सरल, सुबोध एवम् प्रवाहमयी है।

अभ्यास कार्य

व्याख्या

निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए-

(क) जब-तब नींद उचट जाती है .... आने की आहट आती है।

(ख) करवट नहीं बदलता है तम .... आस रात भटकाती है।

(ग) जागृति नहीं अनिद्रा तेरी .... शिला न तम की हट पाती है

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

बौद्धिक प्रश्न :

1. कविता के आधार पर बताइए की कवि की दृष्टि में बाहर का अँधेरा भीतरी दु:स्वप्नों से अधिक भयावह क्यों है?
2. बाहर के अँधेरे को देखकर कवि की क्या दशा होती है?
3. नींद उचट जाने पर कवि की मनोदशा का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
4. कवि को रात-भर कौन-सी आशा भटकाती है?
5. कवि चेतन से फिर जड़ होने की बात क्यों कहता है?
6. अंधकार भरी धरती पर ज्योति चकफेरी क्यों देती है?
7. 'अंतर्नयनों के आगे से शिला न तम की हट पाती है। 'तम की शिला' से कवि का क्या तात्पर्य है?
8. जागृति, अनिद्रा और भव-निशा अँधेरी से कवि का सामाजिक संदर्भों में क्या अभिप्राय है?
9. अन्दर का भय कवि के नयनों को सुनहली भोर का अनुभव क्यों नहीं होने दे रहा है?
10. सन्नाटा कब गहरा हो जाता है?
11. फिर सोने और गहरी निद्रा में खोने की बात क्यों कही गई है?

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

पाठ-8 बादल को घिरते देखा है

कवि - नागार्जुन (छायावादोत्तर के प्रगतिशील कवि)

रचनाएँ - काव्य संग्रह - युगधारा, प्यासी पथराई आँखें, सतरंगे पँखों वाली, तालाब की मछलियाँ, हज़ार-हज़ार बाहों वाली, तुमने कहा था आदि।

उपन्यास - बलचनमा, रतिनाथ की चाची, कुंभीपाक, उग्रतारा आदि।

काव्यगत विशेषताएँ-

इनका वास्तविक नाम वैद्यनाथ मिश्र था। नागार्जुन मूलतः जन-भावनाओं के कवि है। फक्कड़पन और घुमक्कड़ी उनके जीवन की प्रमुख विशेषता है। राजनीतिक, सामाजिक वातावरण उनकी कविता का मूल स्वर है। इनकी कविताओं में धारदार व्यंग्य मिलता है। छंदबद्ध और छंदमुक्त दोनों प्रकार की कविताएँ रची। बाद की उनकी भाषा अधिक संस्कृतनिष्ठ है। पूर्ववर्ती काव्य में भाषा का बहुत सरल एवं सहज रूप मिलता है।

मूल भाव - 'बादल को घिरते देखा है' में प्रकृति के साथ-साथ जन-जीवन का सुन्दर चित्रण हुआ है। कैलाश पर्वत पर जाकर कवि ने सारे घटनाक्रम को अपनी आँखों से देखा है। कविता में उन्होंने बादल के कोमल और कठोर दोनों रूपों का वर्णन किया है। जिसमें हिमालय की बर्फीली घाटियों, झीलों, झरनों तथा देवदार के जंगलों के साथ-साथ किन्नर-किन्नरियों के जीवन का यथार्थ चित्रण किया है।

व्याख्या बिन्दु -

'बादल को घिरते देखा है' कविता में कवि ने स्वयं कैलाश पर्वत पर जाकर इन सभी प्राकृतिक दृश्यों को अपनी आँखों से देखा है। कवि ने झीलों में तैरते हंसो, शैवालों की हरी घास पर प्रणय-क्रीड़ा करते चकवा चकवी, अपनी सुगन्ध के स्रोत को खोजते कस्तूरी मृग, कैलाश शीर्ष पर गरजकर भिड़ते बादलों और किन्नर-किन्नरियों के जीवन का यथार्थ चित्रण किया है। सफ़ेद चोटियों का वर्णन किया है। स्वच्छ, निर्मल, बर्फ़ की सफेद चादर से ढकी चोटियों पर बादल को घिरते देखा है। चकवा-चकवी को रातभर अलग रहने के कारण दुःखी और सुबह होते ही पुनर्मिलन के कारण मानसरोवर में विचरण करते एक-दूसरे के साथ छेड़छाड़ और प्यार भरी क्रीड़ाएँ करते हुए देखा है। कस्तूरी मृग अपनी ही नाभि से आने वाली उन्मादक सुगन्ध के स्रोत को खोजने के लिए दुर्गम घाटियों में इधर-उधर दौड़ता

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

फिरता है परन्तु उसे खोजने में असफल होकर स्वयं पर चिढ़ता है। कैलाश पर्वत पर बरसते बादलों को देखकर कवि को कालिदास रचित ग्रन्थ 'मेघदूत' में वर्णित उस मेघ की स्मृति हो आती है जिसे अपना दूत बनाकर यक्ष ने अपनी पत्नी के पास भेजा था। कवि उस मेघदूत का प्रत्यक्ष देखना चाहता है परन्तु असफल रहता है। अतः वह उसे कालिदास की कल्पना मानकर संतोष कर लेता है। कैलाश पर्वत पर शीतऋतु में घनघोर बरसते बादलों को देखा है। बादलों को बरसते देखकर कालिदास को याद करते हैं। कालिदास 'मेघदूत' में वर्षा का पानी तेज वेग से आकाश में घूमने लगता है लेकिन कवि को कालिदास का 'मेघदूत' कहीं भी दिखाई नहीं देता। कवि उसे कल्पना समझकर छोड़ने की बात करते हैं। 'बादल को घिरते देखा है' बार-बार दोहराए जाने का कारण है कि कवि ने इस कविता में जितने भी दृश्य चित्र बनाए है उन सब में बादल को घिरते दिखाया गया है। हिमालय की ऊँची सफ़ेद चोटियों पर मानसरोवर और अन्य झीलों में पावस, शीत, ग्रीष्म और बसंत ऋतु, किन्नर जाति के वर्णन में बादल घिर आते हैं। कविता में वर्णनात्मक, चित्रात्मक शैली का प्रयोग किया है। तत्सम और तद्भव शब्दावली है। संस्कृतनिष्ठ शब्दावली, भाषा सहज, सरल, सुन्दर एवं प्रसंगानुकूल है।

अभ्यास कार्य

व्याख्या

(क) छोटे-छोटे मोती जैसे .... कमलों पर गिरते देखा है।

(ख) दुर्गम बर्फ़ानी घाटी में .... अपने पर चिढ़ते देखा है।

(ग) ढूँढ़ा बहुत परन्तु लगा क्या .... गरज गरज भिड़ते देखा है।

आशय स्पष्ट कीजिए

अलख नाभि से उठने वाले ....

मैंने तो भीषण जाड़ों में ....

बौद्धिक प्रश्न :

1. 'बादल को घिरते देखा है' कविता में बादलों के सौंदर्य चित्रण के अतिरिक्त अन्य किन दृश्यों का चित्रण किया गया है?
2. प्रणय-कलह से कवि का क्या तात्पर्य है?
3. कस्तूरी मृग के अपने पर ही चिढ़ने के क्या कारण है?
4. बादलों का वर्णन करते हुए कालिदास की याद क्यों आती है? कालिदास के मेघदूत का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

5. कविता में वर्णित प्रकृति चित्रण एवं जन जीवन को अपने शब्दों में लिखिए।
6. कवि ने 'महामेघ को झंझानिल से गरज-गरज भिड़ते देखा है' क्यों कहा है?
7. कवि ने पावस और शरदकाल में बादलों के जिन विशेष रूपों का वर्णन किया है, उन्हें अपने शब्दों में लिखिए।
8. 'बादल को घिरते देखा है'- पंक्ति को बार-बार दोहराए जाने से कविता में क्या सौन्दर्य आया है? अपने शब्दों में लिखिए।
9. 'बादल को घिरते देखा है' कविता के आधार पर नागार्जुन की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

पाठ-9 हस्तक्षेप

कवि - श्रीकांत वर्मा (नयी कविता)

रचनाएँ - काव्य संग्रह- भटका मेघ, दिनारंभ, मायादर्पण, जलसा घर, मगध।

कहानी संग्रह- झाड़ी संवाद

उपन्यास- दूसरी बार

आलोचना- जिरह,
यात्रावृत्तांत-अपोलो का रथ

काव्यगत विशेषताएँ-

कवि का साहित्यिक जीवन एक पत्रकार के रूप में शुरू हुआ। तुलसी पुरस्कार, आचार्य नंद दुलारे वाजपेयी पुरस्कार और शिखर सम्मान से सम्मानित किया गया। इनकी कविता में एक आक्रोश है जो व्यक्तिगत न होकर जन-आक्रोश है। वही कविता की ताकत भी है। यही नहीं उन्होंने कविता को एक जीवंत भाषा दी जिसका मूल स्रोत आम जनता की बोली में है।

श्रीकांत वर्मा की भाषा जनमानस की है। भाषा में सरल और तद्भव शब्दों की भरमार है। कम शब्दों में अधिक संकेत देना उनकी विशिष्टता है। चित्रात्मकता, संवादात्मकता और नाटकीयता उनकी भाषा की अन्य विशेषताएँ हैं। भाषा शैली सरल, सहज एवं प्रभावशाली है। कविताओं में शासक वर्ग की तानाशाही और अत्याचारों का वर्णन है।

मूल भाव - कवि ने हस्तक्षेप कविता में आम व्यक्ति को गलत निर्णयों के विरुद्ध आवाज़ उठाने के लिए प्रेरित किया है। कवि आम जनता का आह्वान करते हुए कहते हैं कि सत्तासीन लोगों द्वारा लिये गलत निर्णयों के विरुद्ध आवाज़ उठानी चाहिए। कवि ने जनतंत्र में स्थापित गलत परम्पराओं पर व्यंग्य किया है।

व्याख्या बिन्दु-

'हस्तक्षेप' कविता में सत्ता की क्रूरता और उसके कारण पैदा होने वाले प्रतिरोध को दिखाया गया है। व्यवस्था को जनतांत्रिक बनाने के लिए हस्तक्षेप की जरूरत होती है वरना व्यवस्था निरंकुश हो जाएगी।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

जनतांत्रिक व्यवस्था में तानाशाही और गलत निर्णयों के कारण आम आदमी दुःखी एवं पीड़ित है। नेताओं द्वारा आम आदमी को गुमराह किया जाता है कि वह उनकी सत्ता के विरोध में एक शब्द भी न कहें, गलत निर्णयों को भी स्वीकार करें। सत्ताधारी ऐश्वर्यपूर्ण जीवन जीते हैं। इस व्यवस्था पर व्यंग्य करते हुए कवि कहते हैं कि मगध को बनाए रखना है, तो मगध में शांति रहनी ही चाहिए।

मुर्दा व्यक्ति से तात्पर्य शोषित व्यक्ति जिसका सब कुछ लुट चुका है। उसके पास अब खोने के लिए कुछ नहीं है। ऐसे व्यक्ति का कोई क्या बिगाड़ सकेगा। वह डर भय से बहुत दूर जा चुका है। जीवित व्यक्ति तंत्र में हस्तक्षेप करने का साहस नहीं कर पाता क्योंकि उसे अपनी मृत्यु तथा सुख सुविधाएँ छिन जाने का भय रहता है। मुर्दा अव्यवस्था में हस्तक्षेप करता है। यह प्रश्न आम आदमी से कहता है कि जब मैं इस अव्यवस्था के खिलाफ खड़ा हो सकता हूँ तो तुम क्यों नहीं? मुर्दा जन-जागृति का भी कार्य करता है।

शांति किसी भी व्यवस्था को कायम रखने के लिए बुनियादी शर्त है। अतः सत्ता पक्ष शांति-व्यवस्था बिगड़ने का भय दिखाकर जनता को हस्तक्षेप करने से रोकता है।

मगध के लोगों में इस बात का डर है कि टोकने का रिवाज न बन जाए। टोकने वालों की संख्या में वृद्धि होने से शासन तंत्र को नुकसान हो जाएगा। चीख पुकार करने वाले को राष्ट्रद्रोही समझ कर दण्डित किया जाता है। लाक्षणिक प्रयोगों का स्पष्टीकरण

(क) 'कोई छींकता तक नहीं'-'छींक' जैसी प्राकृतिक क्रिया भी अप्रत्यक्ष रूप से प्रतिबंधित है।

(ख) 'कोई चीखता तक नहीं' - निरंकुश शासक वर्ग के विरुद्ध कोई भी व्यक्ति आवाज़ नहीं उठा सकता। अपना आक्रोश व्यक्त नहीं कर सकता।

(ग) 'कोई टोकता तक नहीं' - व्यवस्था की कमियों का विरोध करने के लिए मगध का कोई भी मनुष्य हस्तक्षेप करने का साहस नहीं जुटा पाता।

अभ्यास कार्य

व्याख्या

(क) मगध को बनाए रखना है, तो .... मगध है, तो शांति है।

(ख) तुम बच नहीं सकते .... मनुष्य क्यों मरता है।

(ग) कोई चीखता तक नहीं .... क्या कहेंगे लोग?

निम्नलिखित लाक्षणिक प्रयोगों को स्पष्ट कीजिए-

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

(क) कोई छींकता तक नहीं

(ख) कोई चीखता तक नहीं

(ग) कोई टोकता तक नहीं।

बौद्धिक प्रश्न :

1. मगध के माध्यम से 'हस्तक्षेप' कविता किस व्यवस्था की ओर इशारा कर रही है?
2. 'मगध को बनाए रखना है, तो मगध में शांति रहनी ही चाहिए' भाव स्पष्ट कीजिए।
3. मुर्दा शब्द का प्रयोग किस के लिए हुआ है?
4. मुर्दे का हस्तक्षेप क्या प्रश्न खड़ा करता है?
5. मगध निवासी हस्तक्षेप से क्यों कतराते हैं?
6. मगध के लोगों में किस बात का डर है?
7. मगध की निरंकुश शासन व्यवस्था में कोई चीख-पुकार क्यों नहीं कर सकता?
8. 'मगध अब कहने को मगध है, रहने को नहीं' के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है?
9. 'हस्तक्षेप' कविता सत्ता की क्रूरता और उसके कारण पैदा होने वाले प्रतिरोध की कविता है' स्पष्ट कीजिए।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

पाठ–10 घर में वापसी

कवि – सुदामा पांडेय 'धूमिल' (प्रगतिवादी–प्रयोगवादी)

रचनाएँ – काव्य संग्रह– संसद से सड़क तक, कल सुनना मुझे तथा सुदामा पांडेय का प्रजातंत्र आदि।

इनकी अनेक रचनाएँ समकालीन पत्र–पत्रिकाओं में बिखरी पड़ी है जिनका संकलन कार्य अभी नहीं हो पाया है। इनकी अनेक रचनाएँ अभी तक अप्रकाशित है। मरणोपरांत इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

काव्यगत विशेषताएँ–

प्रगतिवादी–प्रयोगवादी कवि धूमिल ग्रामीण वातावरण के कवि हैं। इनके काव्य में समसामयिक जीवन की झलक, व्यंग्य, ग्रामीण संस्कारों से युक्त, नारी जाति के प्रति कोमल भाव हैं। इन्होंने अपने काव्य में मुहावरे, लोकोक्तियों और सूक्तियों का सुन्दर प्रयोग किया है। संवादात्मक शैली का प्रयोग करके भाषा में जान फूँक दी है। लाक्षणिकता एवं प्रतीकात्मकता, मुक्त छन्दों का प्रयोग किया है। भाषा सहज, सरल एवं भावपूर्ण है।

मूल भाव – 'घर में वापसी' कविता धूमिल जी की गरीबी से लड़ रहे परिवार की करुण, कथा है। इसमें कवि ने स्पष्ट किया है कि गरीबी एक अभिशाप है। यह सारे रिश्ते–नातों के बीच एक दीवार खड़ी कर देती है। एक ही परिवार में रहने वाले लोग आपस में अजनबी बन जाते हैं। एक साथ रहते हुए भी अपना दु:ख प्रकट नहीं करते। रिश्ते होते हुए भी खुलते नहीं। कितना अच्छा होता यदि ये रिश्ते मधुर बन जाते।

व्याख्या बिन्दु –

1. कविता में एक ऐसे घर की कामना है जहाँ गरीबी दीवार की तरह बाधक न हो। माँ–पिता, बेटी, पत्नी के बीच स्नेहपूर्ण संबंध हो ताकि जीवन–संघर्ष में घर का सुख प्राप्त हो सकें।
2. कवि मानता है कि वास्तव में वे स्वजन हैं, करीब हैं पर वे बहुत गरीब हैं अभावग्रस्त हैं। गरीबी के कारण पारिवारिक बिखराव आ गया है। जिस कारण अपने दु:ख–सुख को एक दूसरे के सामने कह नहीं पाते। गरीबी के कारण संबंध होकर भी नहीं है।
3. कवि परिवार के सदस्यों को सदस्य न मानकर पाँच जोड़ी आँखें इसलिए मानता है क्योंकि गरीबी

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

के कारण वे पाँचों आपस में खुलकर बातें नहीं करते। उनमें ममता, प्यार और अपनापन की भावना खत्म हो चुकी है। एक-दूसरे को देखते तो हैं लेकिन प्रेम भाव की कमी होती है।

5. 'पत्नी की आँखें, आँखें नहीं हाथ हैं, जो मुझे थामे हुए हैं' से कवि का अभिप्राय है कि उसकी पत्नी मुसीबत के समय उसे बहुत सहारा देती है। हमेशा उत्साहित करती है। कुछ न होने पर भी निराश नहीं होने देती। कवि अपनी पत्नी से प्रेरित होकर गरीबी से लड़ रहा है।

6. रिश्तों के न खुलने का कारण है निर्धनता। परिवार के सदस्यों में निर्धनता के कारण मानसिक तनाव है। वे खुलकर बातें नहीं कर पाते। गरीबी रिश्तों की मधुरता को समाप्त कर देती है। गरीबी के तनाव के कारण सभी के मुँह अलग-अलग दिशाओं में हैं।

7. कवि ऐसे घर की इच्छा करता है जिसमें गरीबी और अभाव के कारण बिखराव न हो। पारिवारिक संबंधों में टूटन न हो और न ही दिखावा हो। घर के सभी सदस्य प्रेम-भावना से रहते हुए दु:ख दर्द को एक-दूसरे के सामने प्रकट कर सकें।

(क) कवि ने माँ की आँखों को तीर्थयात्रा की बस के दो पंचर पहिए कहा है। 'पड़ाव' शब्द का प्रयोग प्रतीकात्मक है, यह मृत्यु का प्रतीक है। 'दो पंचर पहिए' प्रतीकार्थ है ज्योतिहीन दो आँखें। 'पंचर पहिए' में अनुप्रास अलंकार है।

(ख) कवि ने पिता की आँखों को लोहसाँय की ठंडी सलाखें बताया है। प्रतीक रूप में प्रयुक्त किया है। यौवनावस्था में पिता तेजस्वी और रौबदार रहे होंगे पर बुढ़ापे और गरीबी ने उनके तेज़ को उनसे छीन लिया है। भाषा सहज, सरल, भावपूर्ण है। लाक्षणिकता एवं प्रतीकात्मता विद्यमान है। मुक्त छंद हैं।

अभ्यास कार्य

व्याख्या कार्य

'वैसे हम स्वजन हैं, क्योंकि हम पेशेवर गरीब हैं'

'रिश्ते हैं, लेकिन खुलते नहीं हैं................... यह मेरा घर है।'

निम्नलिखित का काव्य सौंदर्य स्पष्ट कीजिए-

(क) माँ की आँखें पड़ाव से पहले ही तीर्थयात्रा की बस में दो पंचर पहिए हैं।

(ख) पिता की आँखे लोहसांय की ठंडी सलाखें हैं।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

बौद्धिक प्रश्न :

1. 'घर में वापसी' कविता का मूल भाव क्या है?
2. कवि किस प्रकार के घर में वापसी की इच्छा करता है?
3. घर एक परिवार है, परिवार में पाँच सदस्य हैं किन्तु कवि पाँच सदस्य नहीं उन्हें पाँच जोड़ी आँखें मानता है, क्यों?
4. परिवार के सदस्य घर में रहते हुए भी करीब नहीं हैं। क्यों?
5. कवि के सामने ऐसी कौन सी विवशता है जो पारिवारिक रिश्तों की मधुरता को समाप्त कर देती है?
6. 'पत्नी की आँखे आँखे नहीं हाथ हैं जो मुझे थामे हुए हैं।' से कवि का क्या अभिप्राय है?
7. कवि ने 'भुन्ना-सी ताला' किसे कहा है? उसे तोड़ने का क्या उपाय बताया है?
8. पारिवारिक रिश्तों के न खुलने का क्या कारण है?

www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

पूरक पुस्तक अंतराल भाग -1

पाठ्यक्रम में पूरक पुस्तक को इसलिए समाहित किया जाता है ताकि छात्र की भाषिक तथा साहित्यिक रूचियों का विकास हो सके।

कक्षाा 11 में हिन्दी (ऐच्छिक) के अंतर्गत पूरक पुस्तक के रूप में 'अंतराल' हमारे समक्ष है। इस पुस्तक को साहित्य की तीन विधाओं से अलंकृत किया गया है। एकांकी, आत्मकथा एवं जीवनी। पुस्तक प्रारंभ करने से पूर्व हमें एकांकी, आत्मकथा एवं जीवनी के अर्थ को समझाना होगा।

Downloaded from www.studiestoday.com